# आकाश दर्शन

अनन्त आकाश में बेशुमार बेतरतीब बिखरे तारे देखना एक चमत्कारिक अनुभव होता है। लेकिन बिखराव में तरतीब खोजना इंसान की खूबी है। उसने प्राचीन काल से ही इस विशाल आकाश में फैले तारों में और गतियों में तरतीब खोजना शुरू कर दिया।

पीछे दिए गए चित्र में तारों के अलग-अलग समूहों को रेखाओं से जोड़कर दिखाया गया है। ऐसे समूह को तारामण्डल कहते हैं। गौरतलब बात यह है कि इन तारों का वैसे परस्पर कोई सम्बंध नहीं है; ये एक–दूसरे के पास-पास हों, यह भी जरूरी नहीं है। रेखाएं हमारी कल्पना की द्योतक हैं। खैर....।

सबसे पहले शायद इन्सान ने सूरज और चांद के पथों में दिलचस्पी ली। इनमें एक नियमितता देखी। सूरज के पथ में पड़ने वाले तारों के समूहों को पहचान के लिए एक-एक नाम दिया। ये तारामण्डल राशियां कहलाए। ये राशियां आकाश में जिस पट्टी में स्थित हैं उसे राशिचक्र (Zodiac) कहते हैं।

यदि आप भी इस नज़र से आकाश को निहारें तो आपको भी बेतरतीबी में तरतीब नज़र आएगी। तब इन तारों का शुमार भी हमारे उन परिचितों में होगा जिनकी एक सूरत होती है, एक नाम होता है और एक ठिकाना (चलता-फिरता ही सही) होता है।

अब ज़रा चित्र पर नज़र डालिए। यह चित्र इस तरह बना है कि जैसे आप सीधे लेटकर आकाश को देख रहे हों। आपका सिर उत्तर में है और पैर दक्षिण में, बाएं हाथ पर पूर्व दिशा है और दाएं हाथ पर पश्चिम। और अब आप चित्र को ऊपर रखकर देखें। आकाश आपको ठीक ऐसा ही दिखेगा।

बस अब यह चित्र और एक टॉर्च लेकर किसी ऐसी जगह पर पहुंच जाइए जहां शहर की रोशनियां न हों। आप जानते ही हैं कि जगमगाते शहरों में आकाश में तारे नज़र नहीं आते।

पूर्णिमा 8 अप्रैल
अमावस्या 23 अप्रैल

**इस माह दिखाई देने वाली राशियां**

| | |
|---|---|
| तुला | पूर्वी क्षितिज पर |
| कन्या | पूर्वी-मध्य आकाश पर |
| सिंह | मध्य आकाश पर |
| कर्क | मध्य-पश्चिम आकाश पर |
| मिथुन | पश्चिम आकाश पर |
| वृषभ | पश्चिम क्षितिज आकाश पर |

| | |
|---|---|
| बुध / शुक्र | पूरे माह नज़र नहीं आएगा। |
| मंगल | पूर्वी क्षितिज पर सुबह 3–3.30 बजे से सूर्योदय तक |
| शनि / बृहस्पति | शाम 7–7.30 बजे से 11.30 बजे तक पश्चिम आकाश पर |

यह चित्र 1 अप्रैल की रात 10 बजे के आकाश का है। 8 अप्रैल को पूर्णिमा है। इसलिए 15 को चांदनी की चमक में तारों के फीके पड़ने का डर रहेगा। वैसे अगर इस दिन किसी कारणवश तारे न भी देख पाओ तो कोई चिन्ता नहीं, आकाशीय पिण्डों की गति का नियम यह है कि 1 अप्रैल को आकाश की जो स्थिति 10 बजे होती है, 2 अप्रैल को वही स्थिति 9 बजकर 56 मिनट पर होगी। अत: यह चित्र 15 अप्रैल रात 9 बजे तथा 30 अप्रैल रात 8 बजे के लिए भी सही है। इसी प्रकार से आकाश की यही स्थिति 31 मार्च को 10 बजकर 4 मिनट पर आएगी। यानी 15 मार्च को 11 बजे तारों की यही स्थिति रहेगी।

यह चित्र भोपाल के अक्षांश (23° 16′ उत्तर) व देशांतर (77° 36′ पूर्व) के हिसाब से तैयार किया गया है। भोपाल से उत्तर में जो लोग रहते हैं उन्हें अन्तर सिर्फ इतना पड़ेगा कि शायद दक्षिण का आकाश उन्हें थोड़ा कम नज़र आएगा। मोटे तौर पर इससे कोई विशेष फर्क नहीं पड़ना चाहिए, बशर्ते कि आप भोपाल से बहुत अधिक उत्तर या दक्षिण में न बसे हों। इसी तरह से भोपाल से पूर्व या पश्चिम जाने पर अन्तर इतना ही पड़ेगा कि चित्र में दर्शाई स्थिति थोड़ी जल्दी (पूर्व) या देर से (पश्चिम) आ सकती है।

हमारा सुझाव है कि सबसे पहले आप उत्तरी आकाश में सप्तर्षि को खोज लें। उसके दो तारों को जोड़ने वाली रेखा को आगे बढ़ाएंगे तो ध्रुव तारा मिल जाएगा। अब अपने चित्र को उत्तर ध्रुव तारे से मिलाकर शेष राशियां, नक्षत्र, तारामण्डल खोजिए।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

# भोपाल का आकाश

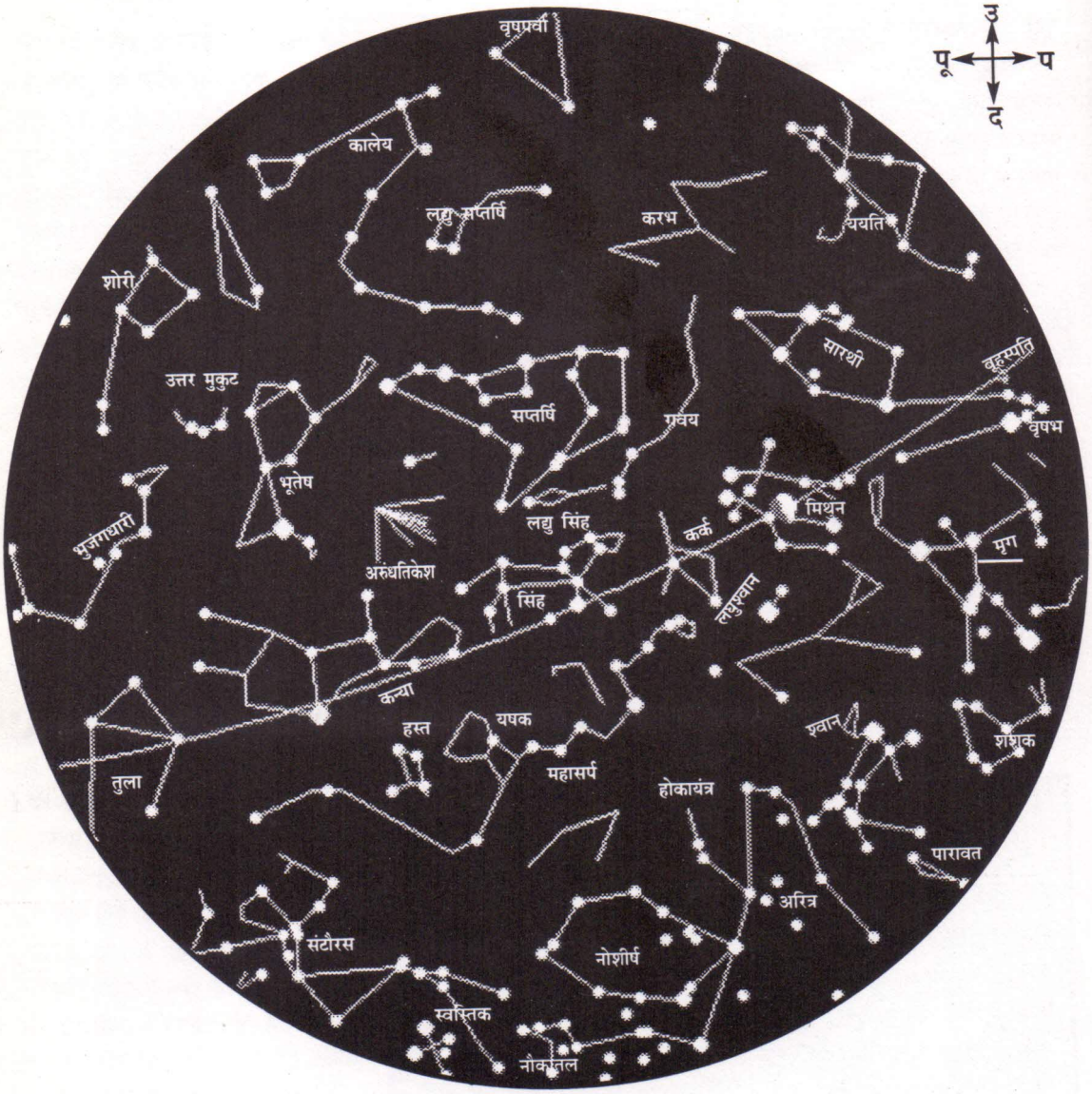


**अप्रैल 1, 2001 रात्रि 10 बजे**
**अप्रैल 15, 2001 रात्रि 9 बजे**
**अप्रैल 30, 2001 रात्रि 8 बजे**

**मुद्रक** : आदर्श प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, भोपाल फोन : 550291, 555442